पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका : विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर, 2020

# नागालैंड की लोककथा

## एकाही और हेलि की दोस्ती

**श्रीमती खुत्सुलू दोज़ो**

प्राचीन काल की बात है।एक गाँव में एकाही नाम का व्यक्ति रहता था।एकाही की दोस्ती नेक आत्माओं से थी।उसका एक दोस्त हेलि भी था जो एक नेक आत्मा था। हेलि एक बहुत ही लम्बा और विशालकाय आकार का आत्मा था।फुगी गाँव में एक बहुत ही ऊँचा पर्वत था जिसे कुम्हुबा कहा जाता था।कुम्हुबा में ऊँचे दर्जे की आत्माएं निवास करती थीं। कुम्हुबा में रहने वाली आत्माएँ जब भी गाँव की तरफ आती थीं तो लोगों से मुलाकात होने पर या तो उन्हें मार डालती थीं या फिर मार कर खा जाती थीं।फुगी गाँव के निवासी एकाही ने जब आत्माओं में सबसे बड़ी नेक आत्मा हेलि के साथ दोस्ती कर ली तो हेलि ने दूसरी आत्माओं को हुक्म दे दिया कि कोई भी आत्मा फुगी गाँव के लोगों को परेशान नहीं करेगी। फुगी गाँव में जो आत्माएं थीं उनमें कुछ दाई माँ होती थीं। उनमें से सबसे बड़ी दाई का नाम वेशोप्रलू था। गाँव में जब भी कोई बीमार पड़ जाता था, किसी की मृत्यु हो जाती थी, तब एकाही एक माध्यम के तौर पर अपने मित्र हेलि से बात करता था। एकाही से बात करने के बाद उस विषय पर हेलि अपने साथी आत्माओं के साथ चर्चा करता था। बातचीत करने के पश्चात हेलि एकाही के पास आता था।फिर एकाही जाकर गाँव के बीमार लोगों को ठीक करता था और मृत लोगों को जिंदा करता था।

एक दिन नेक आत्मा हेलि ने एकाही से कहा कि उसे सात दिनों के लिए मरना होगा और फिर वह जिंदा हो जाएगा, जिसके बाद हेलि के न रहने पर भी वह गाँव के बीमार लोगों का इलाज़ कर सकेगा और मृत लोगों को भी जिंदा कर सकेगा। इस अद्वितीय शक्ति को पाने में एक परेशानी थी। क्योंकि एकाही की पत्नी वेपोरुलू को उसके सात दिनों का मरना मंजूर नहीं था। वेपोरुलू को यह लगता था कि उसका पति दोबारा जीवित नहीं हो पाएगा, इसलिए उसने अपने पति को यह काम करने से मना कर दिया। फुगी गाँव के पास एक बहुत ही सुंदर घाटी थी जिसका नाम गुगा घाटी था।घाटी के बहुत ही बड़े क्षेत्र में पानी के खेत फैले हुए थे।एक दिन गुगा घाटी में कुछ आत्माओं ने मिलकर एक ज़ापोयी नाम के आदमी को मार डाला। ज़ापोयी की

आत्मा को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर आत्माओं ने आपस में बाँट लिया और अपने कैंप कुम्हुबा में वापस लौट गयीं। हालांकि ज़ापोयी की आत्मा मर चुकी थी लेकिन चूँकि उसका शरीर जिंदा था, इसलिए वह व्यक्ति पागल हो गया।पागल ज़ापोयी खेतों में लुढ़क-लुढ़क कर गिरता पड़ता रहता था। गाँव के लोगों ने पागल ज़ापोयी को उठाया और एकाही के घर ले गए।एकाही ने जाकर अपने दोस्त तथा सबसे बड़ी नेक आत्मा हेलि को इस पूरी घटना के बारे में बताया।हेलि ने सभी आत्माओं को बुलाकर उनसे यह कहा कि वह सभी ज़ापोयी की आत्मा के टुकड़ों को जल्द से जल्द वापस लेकर आएं।उन आत्माओं में एक महिला आत्मा ने कहा कि उसने भी ज़ापोयी की आत्मा में से एक किलो लिया है, लेकिन अभी खाया नहीं है। ज़ापोयी की आत्मा के टुकड़ों को लाकर जमा किया गया।उन आत्माओं में एक पागल आत्मा भी थी, उस पागल की आँखें नहीं थीं और उसके कंधे पर सिर्फ एक आँख थी।उसने ज़ापोयी की आत्मा के टुकड़े को खा लिया था इसलिए वह उस टुकड़े को वापस नहीं ला सकी । सभी आत्माओं ने मिलकर उस पागल आत्मा आत्मा को लातों से बहुत मारा और उसे जलाया भी लेकिन फिर भी पागल आत्मा उछल-उछल कर इधर-उधर कूदती रही, पर वह मर नहीं रही थी।अंत में पागल को लुढ़का-लुढ़का कर चट्टान के एक गुफा में ले जाया गया और उसे गुफा में बंद करके बाहर पत्थर रख दिये गये।इस तरह से पागल आत्मा उसी गुफा में कैद होकर रह गयी।चूँकि ज़ापोयी की आत्मा के एक टुकड़े को उस पागल आत्मा ने खा लिया था इसलिए आत्माओं में से ही एक आत्मा के शरीर के टुकड़े को काटकर ज़ापोयी की आत्मा में जोड़ दिया गया। इसके बाद ज़ापोयी की आत्मा जिंदा हो गयी और वह दूसरी आत्माओं के साथ बातें करने लगी। ज़ापोयी के शरीर में जिस स्थान पर दूसरी आत्मा के शरीर का टुकड़ा जोड़ा गया था वहाँ एक बड़ा सा मस्सा दीखने लगा।

आगे चलकर एकाही अपने दोस्त नेक आत्मा हेलि के साथ मिलकर गाँववालों की सहायता करने लगा और गाँववालों के हित में ही काम करने लगा। एकाही के मरने के बाद नेक आत्मा हेलि के बारे में किसी को पता नहीं चला। किन्तु आज भी यह कथा फुगी गाँव के लोगों में बहुत ही प्रचलित है।

टिप्पणी: यह नागालैंड की छाखेसांग जनजाति की छोक्रि भाषा की लोककथा है।

**संपर्क सूत्र:**
ईस्ट दिमापुर
डाक: पुराना बाजार
जिला: दिमापुर,नागालैंड